Volume: 4 Issue: 10 Pages: 121-123

# 1962 के बाद ऐतिहासिक स्मृति और भारत-चीन की रणनीतिक धारणाएँ

**[*1] कैलाश नाथ द्विवेदी**

[*1] सहायक प्राध्यापक, रक्षा अध्ययन विभाग, फ़ीरोज़ गांधी कॉलेज, रायबरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

**Article Info.**
**E-ISSN: 2583-6528**
**Impact Factor (SJIF): 6.876**
**Peer Reviewed Journal**
**Available online:**
**www.alladvancejournal.com**

**Received:** 17/Sep/2025
**Accepted:** 20/Oct/2025

***Corresponding Author**
**कैलाश नाथ द्विवेदी**
सहायक प्राध्यापक, रक्षा अध्ययन विभाग, फ़ीरोज़ गांधी कॉलेज, रायबरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

**सारांश:**
1962 के चीन-भारत युद्ध ने भारत की रणनीतिक सोच और चीन के साथ द्विपक्षीय संबंधों पर गहरी छाप छोड़ी। यह शोधपत्र इस बात की पड़ताल करता है कि 1962 की यादें किस तरह भारत की समकालीन सुरक्षा धारणाओं, नीतिगत निर्णयों और चीन के साथ कूटनीतिक जुड़ाव को आकार दे रही हैं। ऐतिहासिक आख्यानों, सैन्य आकलनों और राजनीतिक व्याख्यानों के आधार पर, यह अध्ययन विश्लेषण करता है कि कैसे सामूहिक स्मृति ने अविश्वास को संस्थागत बना दिया है और रणनीतिक रुख को प्रभावित किया है। यह दक्षिण एशिया के उभरते भू-राजनीतिक परिदृश्य में इतिहास और वास्तविक राजनीति के बीच परस्पर क्रिया की भी जांच करता है।

**मुख्य शब्द:** चीन-भारत युद्ध, भारत-चीन संबंध, 1962 युद्ध, भूराजनीति, दक्षिण एशिया।

## प्रस्तावना:

1962 का चीन-भारत युद्ध, हालांकि संक्षिप्त था, लेकिन इसने भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय संबंधों पर लंबे समय तक प्रभाव डाला है। छह दशक से अधिक का समय व्यतीत होने के बाद भी हार, कथित विश्वासघात और अनसुलझे सीमा विवादों का आघात भारत के रणनीतिक दृष्टिकोण को आकार देना जारी रखे हुए है। इस शोधपत्र का उद्देश्य चीन के प्रति भारत की रणनीतिक धारणाओं पर 1962 के युद्ध के स्थायी प्रभाव की जांच करना है। यह मूल्यांकन करता है कि युद्ध की ऐतिहासिक स्मृति नीति और सार्वजनिक संवाद को आकार देने में एक मनोवैज्ञानिक और संस्थागत शक्ति के रूप में कैसे काम करती है।

## 1962 के युद्ध का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत और चीन के बीच 1962 के संघर्ष की जड़ें ऐतिहासिक, क्षेत्रीय और वैचारिक विवादों में गहराई से निहित हैं। टकराव के केंद्र में पश्चिमी क्षेत्र में अक्साई चिन और पूर्वी क्षेत्र में उत्तर-पूर्वी सीमांत एजेंसी (नेफा), जिसे अब अरुणाचल प्रदेश कहा जाता है, पर परस्पर विरोधी क्षेत्रीय दावे थे। भारत ने मैकमोहन रेखा का पालन किया, जो ब्रिटिश भारत और तिब्बत के बीच 1914 के शिमला सम्मेलन के दौरान खींची गई सीमा थी, जबकि चीन ने मैकमोहन रेखा की वैधता को साम्राज्यवाद का अवशेष मानते हुए खारिज कर दिया (मैक्सवेल, 1970)।

चीन ने 1950 के दशक में अक्साई चिन के माध्यम से झिंजियांग को तिब्बत से जोड़ने वाली एक सड़क का निर्माण किया। यह एक ऐसा कदम था जिसके बारे में भारत को इसके पूरा होने के बाद ही पता चला। दोनों पक्ष विवादित सीमाओं पर सैनिकों की तैनाती में लग गए। साथ ही वे इसे एक दूसरे के खिलाफ सीमाओं के अतिक्रमण की कार्रवाई के रूप में देखते रहे (गर्वेर, 2001)।

युद्ध 20 अक्टूबर, 1962 को शुरू हुआ, जब चीनी सैनिकों ने लद्दाख और मैकमोहन रेखा के पार एक साथ आक्रमण शुरू किया। भारत, उच्च ऊंचाई वाले युद्ध के लिए तैयार नहीं था और उसके पास रसद सहायता की कमी थी, इसलिए उसे एक त्वरित और निर्णायक हार का सामना करना पड़ा। 21 नवंबर को, चीन ने एकतरफा युद्धविराम की घोषणा की और अक्साई चिन पर नियंत्रण बनाए रखते हुए पूर्वी क्षेत्र से वापस चला गया। यह हार भारत के लिए एक मनोवैज्ञानिक झटका थी, जिसने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की विश्वसनीयता को कम कर दिया और देश की रणनीतिक और सैन्य स्थिति को नया रूप दिया (मैक्सवेल, 1970; गांगुली और परदेसी, 2009)।

## ऐतिहासिक स्मृति का निर्माण

ऐतिहासिक स्मृति केवल अतीत की घटनाओं का रिकॉर्ड नहीं है, बल्कि राजनीतिक, सांस्कृतिक और संस्थागत ताकतों द्वारा गढ़ी गई सामाजिक रूप से निर्मित गाथा है। भारतीय संदर्भ में, 1962 का युद्ध एक राष्ट्रीय आघात और स्वतंत्रता के बाद की रणनीतिक चेतना में एक प्रारंभिक क्षण दोनों के रूप में एक अद्वितीय स्थान रखता है। संघर्ष की सामूहिक स्मृति को आधिकारिक आख्यानों, सार्वजनिक भाषणों, मीडिया प्रतिनिधित्व और शिक्षा नीति (मिश्रा, 2020) के माध्यम से मजबूत किया गया है।

चीन द्वारा पंचशील-शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांतों के साथ विश्वासघात भारतीय आख्यानों में एक आवर्ती विषय है। इस कथित विश्वासघात ने नेहरूवादी आदर्शवाद को गहराई से बदनाम किया और चीन को कपटी और विस्तारवादी के रूप में देखा। विभिन्न राजनीतिक नेताओं ने मजबूत रक्षा नीतियों की वकालत करने और सीमा मुद्दों पर सख्त रुख को सही ठहराने के लिए 1962 की यादों का हवाला दिया है (गांगुली और परदेसी, 2009)।

संस्थागत स्मृति भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय सैन्य प्रशिक्षण संस्थान और रणनीतिक थिंक टैंक अक्सर 1962 के युद्ध को गलत अनुमान और तैयारियों की कमी के मामले के रूप में उद्धृत करते हैं, जो परिचालन सिद्धांतों और रणनीतिक योजना को प्रभावित करता है। स्कूली पाठ्यपुस्तकें, विशेष रूप से सीमावर्ती राज्यों में, युद्ध को राष्ट्रवादी शब्दों में प्रस्तुत करना जारी रखती हैं, जिससे चीन के बारे में संदेह और सावधानी का एक पीढ़ीगत संचरण होता है (जैकब, 2017)।

सांस्कृतिक आख्यान जैसे फिल्में, वृत्तचित्र और साहित्य ने युद्ध की विरासत को जनता की कल्पना में और मजबूत कर दिया है। ये चित्रण अक्सर भारतीय सैनिकों की वीरता और चीनी नेतृत्व की कपटता पर जोर देते हैं, जिससे संघर्ष के नैतिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है जो लोकप्रिय धारणाओं और नीतिगत बहसों को समान रूप से प्रभावित करता है (कपूर, 2018)।

## रणनीतिक सोच पर प्रभाव

भारत की रणनीतिक सोच पर 1962 के युद्ध का प्रभाव गहरा और बहुआयामी है। सैन्य स्तर पर, इस संघर्ष ने भारत की तैयारियों में महत्वपूर्ण कमियों को उजागर किया, जिससे रक्षा योजना, सैन्य संरचना और खरीद रणनीतियों में बड़े सुधार हुए। एक महत्वपूर्ण विकास पर्वतीय युद्ध क्षमताओं में सुधार पर जोर देना रहा है। माउंटेन स्ट्राइक कोर की स्थापना, वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सैनिकों की तैनाती में वृद्धि, और सड़क, हवाई पट्टी और संचार लाइनों सहित सीमा अवसंरचना का उन्नयन 1962 के बाद के रणनीतिक पुनर्मूल्यांकन से सीधे जुड़े हुए हैं (टेलिस, 2017)।

युद्ध ने भारत के नागरिक-सैन्य संबंधों और रणनीतिक संस्कृति के लिए भी एक चेतावनी के रूप में कार्य किया। इसने सैन्य आधुनिकीकरण के लिए अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप रक्षा बजट में वृद्धि हुई और एक अधिक मुखर राष्ट्रीय सुरक्षा नीति बनी। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन और अन्य संस्थानों को विदेशी हथियार आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम करने के लिए अधिक ध्यान और धन मिलना शुरू हुआ (पंत और जोशी, 2020)।

विदेश नीति के दृष्टिकोण से, 1962 की याद ने चीन के प्रति भारत के सतर्क और अक्सर संदेहपूर्ण रुख में योगदान दिया है। सामरिक स्वायत्तता एक मार्गदर्शक सिद्धांत बनी हुई है, लेकिन इसे मुद्दा-आधारित गठबंधनों द्वारा बढ़ावा दिया गया है, खासकर चीनी विस्तारवाद से सावधान देशों के साथ। संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) में भारत की भागीदारी इस संतुलनकारी कार्य की अभिव्यक्ति है, दक्षिण पूर्व एशिया और इंडो-पैसिफिक (गांगुली और परदेसी, 2009; स्मिथ, 2021) तक इसकी पहुंच है।

1962 की विरासत 2020 के गलवान घाटी संघर्षों के दौरान भी स्पष्ट रूप से देखी गई। भारतीय रणनीतिक व्यवहार - जिसमें त्वरित सैन्य लामबंदी, तेजी से बुनियादी ढांचे की मरम्मत और राजनीतिक संकल्प शामिल है - 1962 की पराजय से सीखे गए सबक से प्रभावित था। कूटनीतिक और सैन्य दोनों तरह से दृढ़ रहने की इच्छा, एक पुनर्संयोजित रणनीतिक दृष्टिकोण का सुझाव देती है जो ऐतिहासिक स्मृति को समकालीन भू-राजनीतिक गणनाओं के साथ मिलाती है (मिसरा, 2020)।

## राजनीतिक और सार्वजनिक चर्चा

1962 के युद्ध के इर्द-गिर्द भारत में राजनीतिक विमर्श ने जनता की धारणा और चुनावी आख्यानों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजनीतिक दल, खास तौर पर सीमा पर बढ़ते तनाव के समय, राष्ट्रीय एकता और मजबूत नेतृत्व की आवश्यकता को रेखांकित करने के लिए अक्सर युद्ध का संदर्भ देते हैं। नेहरू की कथित रणनीतिक विफलताओं की याद का इस्तेमाल लगातार सरकारों ने अपनी नीतियों के विपरीत और अधिक सशक्त विदेश नीति रुख पर जोर देने के लिए किया है (गांगुली और परदेसी, 2009)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने, विशेष रूप से, रक्षा तैयारियों और मुखर कूटनीति के महत्व पर जोर देने के लिए अक्सर अपने राष्ट्रवादी बयानबाजी में युद्ध का हवाला दिया है। उदाहरण के लिए, 2020 में गलवान घाटी में सीमा गतिरोध के दौरान, राजनीतिक भाषणों और मीडिया में 1962 का संदर्भ आम था, जिसने इस कथन को पुष्ट किया कि भारत को पिछली गलतियों को नहीं दोहराना चाहिए (मिश्रा, 2020)।

मीडिया की कहानियों, लोकप्रिय सिनेमा और सोशल मीडिया द्वारा आकार लिए गए सार्वजनिक विमर्श में अक्सर युद्ध को द्विआधारी नैतिक शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है- भारत को पीड़ित और चीन को हमलावर के रूप में। यह रूपरेखा भारत की वर्तमान रणनीतिक स्थिति में नैतिक वैधता की भावना को मजबूत करती है और सीमा पर चीनी कार्रवाइयों के प्रति दृढ़ प्रतिक्रिया के लिए व्यापक जन समर्थन जुटाती है (कपूर, 2018)।

1962 का युद्ध शैक्षिक आख्यानों और सार्वजनिक स्मरणोत्सवों में भी एक कसौटी बना हुआ है। वार्षिक स्मारक, राष्ट्रीय सुरक्षा पर राजनीतिक टिप्पणियाँ और वृत्तचित्रों का समय-समय पर पुनः प्रसारण, जन चेतना में संघर्ष की प्रमुखता को बनाए रखने का काम करते हैं। ऐतिहासिक स्मृति के इस निरंतर सांस्कृतिक सुदृढ़ीकरण ने युद्ध को भारतीय मानस में सतर्कता और लचीलेपन का एक स्थायी प्रतीक बना दिया है (जैकब, 2017)।

ऐतिहासिक स्मृति और समकालीन राजनीतिक रणनीति के बीच के संबंध ने एक फीडबैक लूप बनाया है, जिसमें रणनीतिक निर्णय सामूहिक स्मृति से प्रभावित होते हैं और उसे मजबूत करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। यह चक्रीय संबंध चीन से संबंधित मुद्दों पर पार्टी लाइनों के पार राजनीतिक आम सहमति बनाए रखने में मदद करता है, भले ही नीति की बारीकियां अलग-अलग हों।

## चीन का परिप्रेक्ष्य और रणनीतिक गणना

जबकि 1962 का युद्ध भारत की राष्ट्रीय स्मृति में एक प्रमुख विशेषता है, चीन के रणनीतिक विमर्श में इसका स्थान अधिक संयमित और व्यावहारिक है। चीन इस संघर्ष को राष्ट्रीय आघात या वैचारिक विश्वासघात के क्षण के बजाय क्षेत्रीय संप्रभुता और सीमा सुदृढ़ीकरण के नज़रिए से देखता है। आधिकारिक चीनी आख्यान युद्ध को वास्तविक नियंत्रण रेखा के पार भारतीय उकसावे और अनधिकृत अतिक्रमण के खिलाफ एक रक्षात्मक जवाबी उपाय के रूप में पेश करता है (गर्वेर, 2001)।

सामरिक दृष्टिकोण से, चीन की नीति अपनी परिधि को सुरक्षित रखने और सीमावर्ती क्षेत्रों, विशेष रूप से तिब्बत और झिंजियांग में स्थिरता बनाए रखने के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित रही है। 1950 के दशक में अक्साई चिन के माध्यम से सड़क का निर्माण, जिसने युद्ध के फैलने में योगदान दिया, दूरस्थ क्षेत्रों को एकीकृत और समेकित करने के व्यापक उद्देश्य का हिस्सा था (मैक्सवेल, 1970)। तब से, बीजिंग ने अपनी दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर कथित खतरों के प्रति दृढ़, यद्यपि नपे-तुले, प्रतिक्रियाओं की नीति बनाए रखी है।

भारत के विपरीत, चीन ने सार्वजनिक शिक्षा या लोकप्रिय मीडिया में 1962 की यादों को संस्थागत रूप नहीं दिया है। युद्ध पर व्यापक रूप से चर्चा या स्मरण नहीं किया जाता है, जो एक जानबूझकर रणनीतिक संस्कृति को दर्शाता है जो अतीत के ऐसे संघर्षों को दोहराने से बचता है जो वर्तमान कूटनीति या जनमत को बाधित कर सकते हैं (फ्रैवेल, 2008)। भारत और चीन के बीच युद्ध की यादों में इस विषमता ने स्थायी विश्वास की कमी में योगदान दिया है।

समकालीन रणनीतिक गणनाओं में, चीन अक्सर भारत को क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा के ढांचे के माध्यम से देखता है, खासकर जब भारत संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ अपने रणनीतिक संबंधों को गहरा करता है और क्वाड जैसी इंडो-पैसिफिक पहलों के साथ जुड़ता है। तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में चीन का सैन्य आधुनिकीकरण और एलएसी के साथ बुनियादी ढांचे का विकास, जिसमें दोहरे उपयोग वाले गांवों का निर्माण शामिल है, अपनी शक्ति दिखाने और अपने क्षेत्रीय दावों की रक्षा करने के दीर्घकालिक इरादे का संकेत देता है (स्मिथ, 2021)।

इसके अलावा, सीमा कूटनीति के प्रति बीजिंग का दृष्टिकोण अक्सर लेन-देन वाला होता है। भारत के साथ सीमा वार्ता के दौर में शामिल होने के साथ-साथ, चीन एक साथ अपनी सैन्य स्थिति को मजबूत करता है और आर्थिक और कूटनीतिक पहल करता है जो दक्षिण एशिया में भारतीय प्रभाव को चुनौती देती है। चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा, जो पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरता है, इस बात का एक प्रमुख उदाहरण है कि कैसे रणनीतिक बुनियादी ढांचे का उपयोग भू-राजनीतिक लाभ का विस्तार करते हुए क्षेत्रीय दावों को मजबूत करने के लिए किया जाता है (गांगुली और परदेसी, 2009)।

इस प्रकार, चीन का रणनीतिक व्यवहार ऐतिहासिक शिकायतों की तुलना में दीर्घकालिक भू-राजनीतिक गणना और शासन सुरक्षा द्वारा अधिक आकार लेता है। हालांकि, ऐतिहासिक आख्यानों में भिन्नता और 1962 की व्याख्या करने के लिए साझा ढांचे की अनुपस्थिति ने दो एशियाई दिग्गजों के बीच विश्वास-निर्माण और संघर्ष समाधान में बाधा उत्पन्न की है।

## निष्कर्ष:

यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि 1962 का भारत-चीन युद्ध केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं बल्कि भारत की सामूहिक चेतना और रणनीतिक सोच को आकार देने वाला निर्णायक क्षण था। इस युद्ध ने भारत की सुरक्षा नीतियों, कूटनीतिक दृष्टिकोण और सामरिक संस्कृति में गहरे परिवर्तन लाए। यद्यपि दशकों बीत चुके हैं, परंतु उस पराजय की स्मृति आज भी भारत के नीति-निर्माताओं के निर्णयों को प्रभावित करती है। चीन के प्रति भारत का सतर्क और यथार्थवादी रवैया इसी ऐतिहासिक अनुभव का परिणाम है। दोनों देशों की स्मृति और दृष्टिकोण में विद्यमान भिन्नताएँ पारस्परिक विश्वास निर्माण में अब भी बाधक बनी हुई हैं। अतः आवश्यक है कि इतिहास की सीख को आत्मसात करते हुए भारत संतुलित, दूरदर्शी और आत्मनिर्भर रणनीति के माध्यम से अपनी सुरक्षा और कूटनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करे।

## संदर्भ सूची:


1. फ्रावेल, एम. टी. (2008).मजबूत सीमाएँ, सुरक्षित राष्ट्रः चीन के क्षेत्रीय विवादों में सहयोग और संघर्ष. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.
2. गांगुली, एस., और परदेसी, एम.एस. (2009). भारत की साठ साल की विदेश नीति की व्याख्या. इंडिया रिव्यू, 8(1), 419.
3. गर्वर, जे. डब्ल्यू. (2001). दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धाः बीसवीं सदी में चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता. वाशिंगटन विश्वविद्यालय प्रेस.
4. जैकब, एच. (2017). लाइन ऑन फायरः संघर्ष विराम उल्लंघन और भारत-पाकिस्तान तनाव में वृद्धि. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. कपूर, ए. (2018). भारत और दक्षिण एशियाई सामरिक त्रिकोण. रूटलेज.
6. मैक्सवेल, एन. (1970). भारत का चीन युद्ध. पैंथियन बुक्स.
7. मिश्रा, के. (2020). 1962 की यादः स्मृति, राष्ट्रवाद और चीन-भारत संबंध. एशियाई सर्वेक्षण, 60(2), 256
8. पंत, एच.वी., और जोशी, वाई. (2020).अमेरिकी धुरी और भारतीय विदेश नीतिः एशिया का उभरता हुआ शक्ति संतुलन. पाल्ग्रेव मैकमिलन.
9. स्मिथ, जे.एम. (2021). शीत शांतिः इक्कीसवीं सदी में चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता. लेकिंसगटन बुक्स.
10. टेलिस, ए. जे. (2017). मुसीबतें, वे बटालियनों में आती हैंः भारतीय वायु सेना की कई तरह की परेशानियाँ. कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस